भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी विभाग

पाठ: **<u>गीत-अगीत</u>** कार्यपत्रिका की तिथिः ----------

संसाधन व्यक्तिः श्रीमती बीना स्टिफन तिथिः----------

विद्यार्थी का नाम :---------- कक्षा : IX ब

1.	जब शुक गाता है, तो शुकी के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है ?	
उ.	जब शुक गाता है, तो शुकी का हृदय प्रसन्नता से फूल जाता है । वह उसके प्रेम में मग्न हो जाती है ।	
2	प्रेमी जब गीत गाता है, तो प्रेमिका की क्या इच्छा होती है ?	
उ.	प्रेमी जब गीत गाता है, तब उसकी प्रेमिका घर छोड़कर उसके पास खिंची चली आती है । वह नीम के पेड़ के नीचे खड़ी होकर उसके गीत को चुपचाप सुनती है । तब उसकी यह इच्छा होती है कि वह भी उसके गीत की कड़ी बन जाए अर्थात् उस गीत में उसका उल्लेख भी किया जाए । वह अपने मन में भी गीत गुनगुनाने लगती है ।	
3	प्रथम छंद में वर्णित प्रकृति-चित्रण को लिखिए ।	
उ.	सामने नदी बह रही है । वह मानो अपनी विरह-वेदना को कलकल स्वर में गाती हुई चली जा रही है । वह किनारों को अपनी व्यथा सुनाती जा रही है । उसके किनारे के पास एक गुलाब का फूल अपनी डाल पर हिल रहा है । वह मानो सोच रहा है कि यदि परमात्मा ने उसे स्वर दिया होता तो वह भी अपने दुख को व्यक्त करता ।	
4.	प्रकृति के साथ पशु-पक्षियों के संबंध की व्याख्या कीजिए ।	
उ.	प्रकृति के साथ पशु-पक्षियों का गहरा संबंध है । पशु-पक्षियों का जीवन प्रकृति पर ही निर्भर है । प्रकृति की सुंदरता पशु-पक्षियों को भी गुनगुनाने तथा चहचहाने के लिए आकुल कर देती है । जब सूर्य की वासंती किरणें शुक के अंगों को छूती है तो वह प्रसन्नता से गा उठता है ।	
5.	मनुष्य को प्रकृति किस रूप में आंदोलित करती है ? अपने शब्दों में लिखिए ।	
उ.	प्रकृति मनुष्य को भी आह्लादित करती है । साँझ के समय स्वाभाविक रूप से प्रेमी का मन आल्हा गाने के लिए ललचा उठता है । यह साँझ की ही मधुरिमा है जिसके कारण प्रेमी के हृदय में प्रेम उमड़ने लगता है ।	
6.	सभी कुछ गीत है, अगीत कुछ नहीं होता । कुछ अगीत भी होता है क्या ? स्पष्ट कीजिए ।	
उ.	गीत और अगीत में थोड़ा-सा अंतर होता है । मन के भावों को प्रकट करने से गीत बनता है और उन्हें मन-ही-मन अनुभव करना 'अगीत' कहलाता है । यद्यपि 'अगीत' का प्रकट रूप से कोई अस्तित्व नहीं होता , किंतु वह होता अवश्य है । जिस भावमय मनोदशा में गीत का जन्म होता है, उसे 'अगीत' कहा जाता है ।	
7.	'गीत-अगीत' के केंद्रीय भाव को लिखिए ।	

उ.	'गीत-अगीत' के केंद्रीय भाव यह है कि जिस भाव या विचार को स्वर के माध्यम से अभिव्यतक्ति का अवसर मिल जाता है, वह गीत बन जाता है । पर इसके साथ-साथ अगीत के महत्त्व को भी भुलाया नहीं जाना चाहिए । यह वह गीत होता है जो केवल मन के अंदर ही उमड़-घुमड़ कर रह जाता है । उसे स्वर नहीं मिल पाता, अतः अभिव्यक्त नहीं होता । इसकी गूँज सुनी तो नहीं जाती, पर अनुभव की जा सकती है ।	